भारतीय भाषाओं में रामकथा

असमिया भाषा

भाग—2

सम्पादक
डॉ. अनुशब्द

वाणी प्रकाशन
4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली 110 002
फ़ोन : +91 11 23273167 फ़ैक्स : +91 11 23275710

शाखाएँ
अशोक राजपथ, पटना 800 004, बिहार
कॉफ़ी हाउस कैम्पस, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद 211 001, उत्तर प्रदेश
महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा 442 001, महाराष्ट्र
सुल्तानिया रोड, मोतिया पार्क, भोपाल 462 001, मध्य प्रदेश

www.vaniprakashan.com
marketing@vaniprakashan.in
sales@vaniprakashan.in

In Association with

ESTD.-1986
Ayodhya Shodh Sansthan

presents

BHARTIYA BHASHAON MEIN RAMKATHA : ASAMIYA BHASHA-2

Chief Editor Dr. Yogendra Pratap Singh
Editor Dr. Anushabda
Co-*Editor* Dr. Charu Goel
Visualisation Dr. Yogendra Pratap Singh

ISBN : 978-93-89915-83-9
Religion/Culture

© अयोध्या शोध संस्थान

प्रथम संस्करण 2020

मूल्य : ₹ 495

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

सिटी प्रेस, दिल्ली-110 095 में मुद्रित

वाणी प्रकाशन का लोगो मक़बूल फ़िदा हुसेन की कूची से

अनुक्रम

माधव कन्दलि के 'सप्तकाण्ड रामायण' में चित्रित राम की भूमिका 11
—बर्नाली बैश्य

श्रीमन्त शंकरदेव की रचनाओं में राम 19
—चयनिका दत्त/परिस्मिता काकति

माजुली की मुखौटा कला में राम 25
—डिम्पी दत्ता/बेबी विश्वकर्मा

माजुली की मुखौटा कला में राम 31
—किरण कलिता/हिटलर सिंह

शंकरदेव के राम 36
—पूजा बरुवा

वाड़ी लीबा कथा कला के माध्यम से मणिपुरी रामकथा 43
—सरस्वती सिंघा

मणिपुर में रामभक्ति आन्दोलन 46
—प्रो. ह. सुवदनी देवी

मिजो रामायण एवं मिजोरम के समाज का अन्तःसम्बन्ध : एक अनुशीलन 52
—प्रो. दिनेश कुमार चौबे

कोकबोरोक-भाषी लोक में रामकथा 57
—डॉ. मिलनरानी जमातिया

रामकाव्य की परम्परा और तुलसी के राम 63
—प्रो. चन्दन कुमार

गुणों के समुच्चय : राम 67
—प्रो. सूर्यकान्त त्रिपाठी

भोजपुरी लोकजीवन में राम 73
—डॉ. सुनील कुमार तिवारी

पुरातन कथा को नवीन रंगों से उकेरने का प्रयास 82
—डॉ. अनिता पी.एल.

गुणों के समुच्चय : राम

प्रो. सूर्यकान्त त्रिपाठी

राम के गुण अनन्त हैं, ईश्वर हैं, फिर भी उन्हें इसका अभिमान नहीं है। वे एक सामान्य व्यक्ति की तरह अधर्म से बचते हुए धर्म की मर्यादा में स्थित रहते हैं, इसीलिए सबकी दृष्टि में वे 'मर्यादा पुरुषोत्तम' हैं।

महर्षि वाल्मीकि को अपने आदिकाव्य के लिए एक ऐसे नायक की तलाश थी, जिसमें सभी सद्गुणों की विद्यमानता हो, जिसका जीवन धर्म और सदाचरण का निकष हो और जो सम्पूर्ण लोकों का एकमात्र प्रिय हो। वाल्मीकि ने ऐसे लोकोत्तर गुणों की एक सूची तैयार की और अपने आश्रम पर पधारे देवर्षि नारद को देते हुए प्रश्न किया—

''कोन्वस्मिन् साम्प्रतम लोके गुणवान् कच
वीर्यवान्। धर्मज्ञ च कृतज्ञ च तस्यवाक्यो दृढ़व्रतः।।
चरित्रेण च को युक्तः सर्वभूतेषु को पितः। विद्वान् कः कः समर्थ च क
चैकः प्रियदर्शनः।। आत्मवान् को जितक्रोधो द्युतिमान् कोऽनसूयकः।
क च विभ्यति देवा च जातरोशस्य संयुगे।।''[1]

अर्थात् इस समय संसार में गुणवान्, पराक्रमी, धर्मज्ञ, कृतज्ञ, सत्यवादी और दृढ़प्रतिज्ञ कौन है? सदाचारी, समस्त प्राणियों का हितसाधक, विद्वान, सामर्थ्यवान और एकमात्र प्रियदर्शन पुरुष कौन है? मन पर अधिकार रखने वाला, क्रोध को जीतने वाला, कान्तिमान और किसी की भी निन्दा नहीं करने वाला कौन है? तथा संग्राम में कुपित होने पर जिससे देवता भी डरते हैं। महर्षि वाल्मीकि का इस प्रकार का प्रश्न सुनकर नारद जी ने उत्तर दिया—

''इक्ष्वाकुवंशप्रभो रामोनामजनैः श्रुतः।
नियतात्मा महावीर्यो वाग्मी द्युतिमान धृतिमान वशी।।
बुद्धिमन्नितिमान् वाग्मी श्रीमाञ्छत्रुनिवर्हणः ।''[2]

अर्थात् राजा इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न एक ऐसे पुरुष हैं, जो लोगों में रामनाम से विख्यात हैं। वे मन को वश में रखने वाले महाबलवान, कान्तिमान, धैर्यवान और जितेन्द्रिय हैं। बुद्धिमान, नीतिज्ञ, वक्ता, शोभायमान तथा शत्रु के संहारक हैं।

''विपुलांशो महाबाहु कम्बुग्रीवो महाहनुः।।
महोरस्को महेश्वासो गूढ़जत्रुपुरिन्दमः।
आजानुबाहु सुशिराः सुललाटः सुविक्रमः।।
समः समविभक्तामः स्निग्धवर्णः प्रतापवान्।
पिनवक्षः विशालाक्षो लक्ष्मीवाञ्धुलक्षणः।।''[3]